

मेवाड का इतिहास

मेवाड रियासत

- ⇒ क्या है ⇒ उदयपुर इसके भास-पास का क्षेत्र
- ⇒ इसके अन्तर्गत जिले = उदयपुर
चित्तौड़गढ़
राजसमंद
भीलवाड़ा
सलूमवर
शाहपुरा
- ⇒ प्राचीन नाम = मेरुघाट
प्रग्वार
- ⇒ मेवाड रियासत का जनपद था = शिपि जनपद

गुहिल वंश

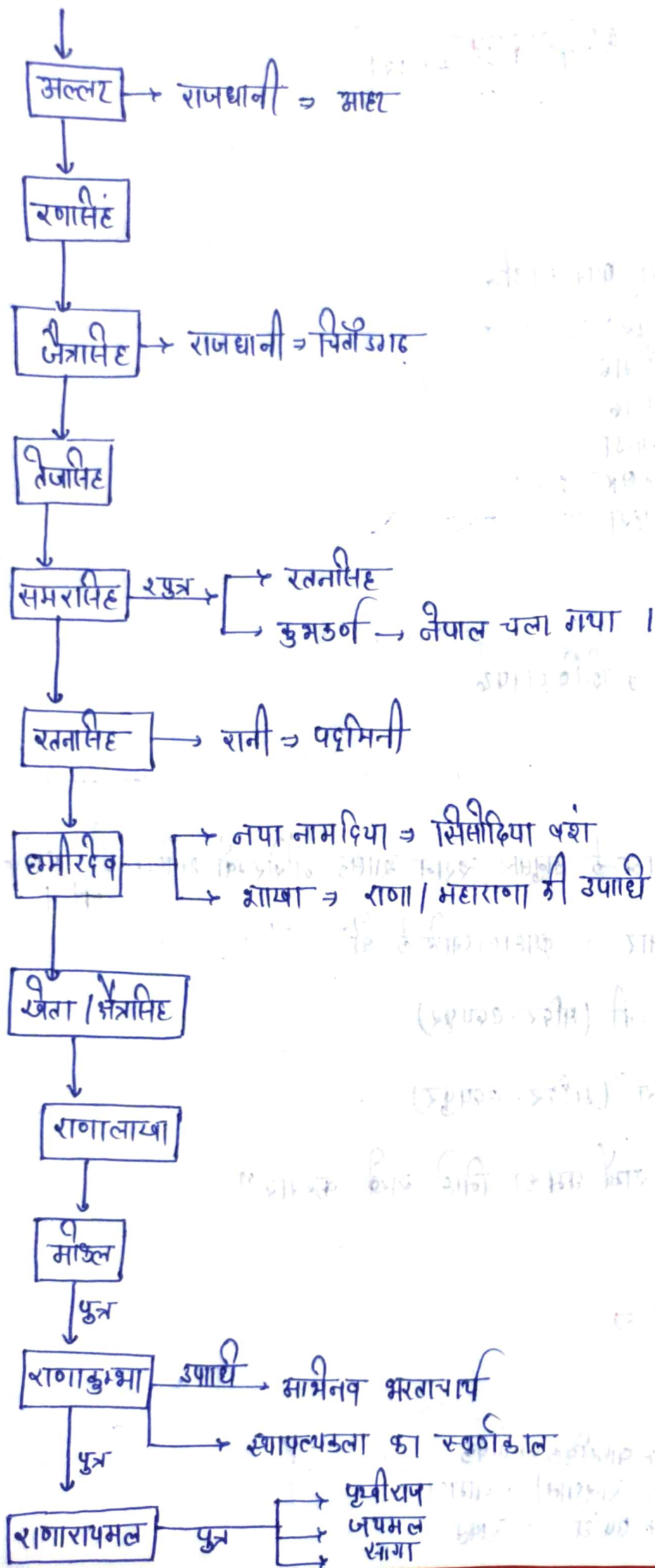
- उत्पत्ति हुई = मनुज-फजल के अनुसार ईरान ब्रासड नौशेर खान भादिल की संतान थी।
- डा मण्डाकर के अनुसार = ब्राह्मण जाति के थे
- कुलदेवता = एकलिंग जी (मंदिर-उदयपुर)
- आराध्य देवी = वाणमाता (मंदिर-उदयपुर)
- धर्मवाच्य था "जी दूह राखे धर्म का निहि राखे करतार"

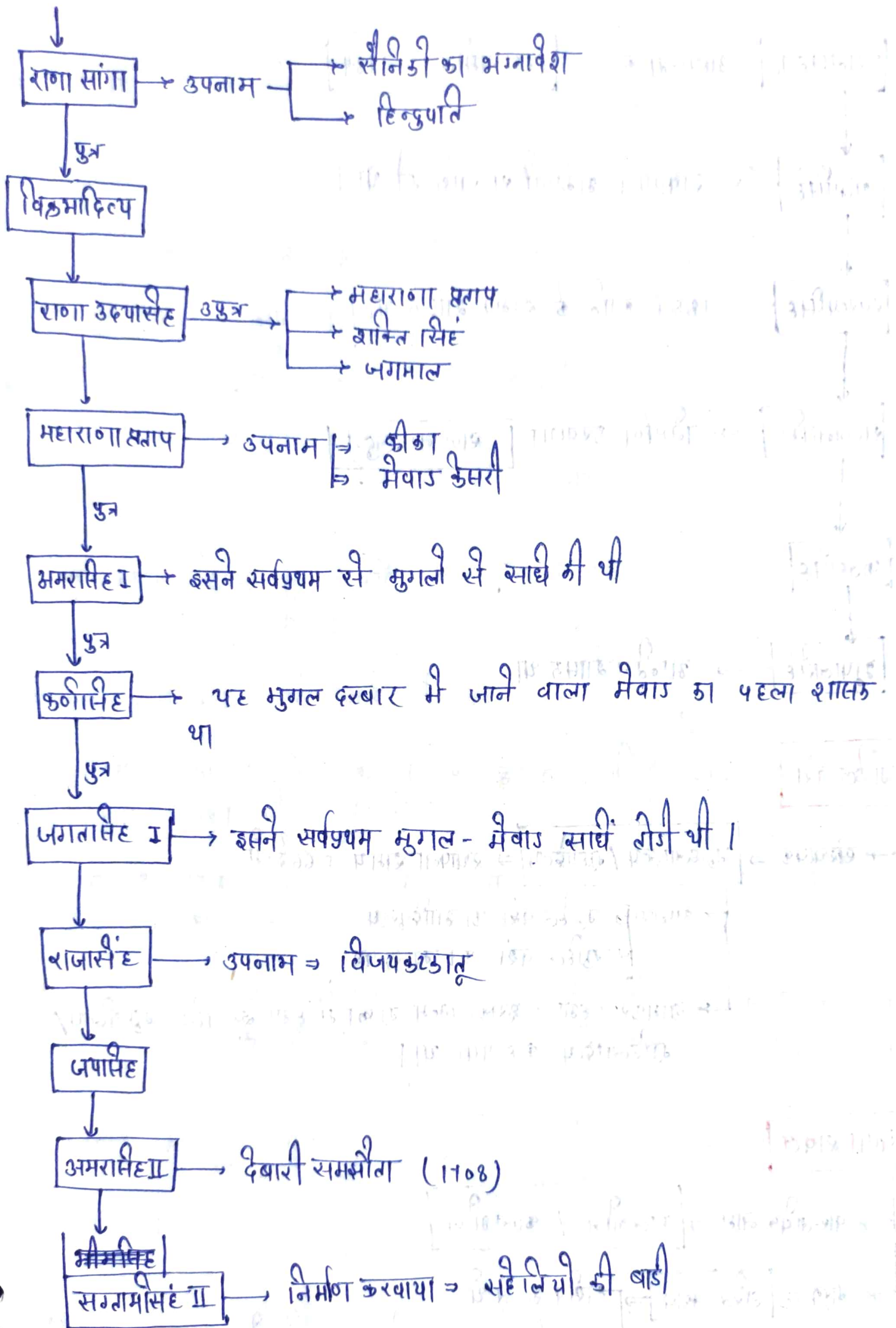
⇒ गुहिल वंशीय शासकी की क्रम =

सम्पापड = गुहिलादित्य

↓
वत्सरावल

- वात्सपिड सम्पापड
- राजधानी = नागदा
- उपाध = रावल





जगतसिंह II ⇒ अष्टपदग की ⇒ दुरज समीलन 1134

श्रीमसिंह ⇒ सर्वप्रथम भग्नीजी से साधे की थी ।

स्वरूपसिंह ⇒ 1857 क्रांति के समय शासक था ।

सज्जनसिंह ⇒ निर्माण करवाया **सज्जनगढ़ दुर्ग**

फतहसिंह

भूपालसिंह ⇒ आन्तरिक शासक था

गुहिल वंश

→ संस्थापक ⇒ **गुहिलादित्य / गुहादित्य** ⇒ स्थापना समय 566 ई.पू.

→ उपनाम **गुहिल वंश का आदिपुरुष**
गुहिल वंश का मूलपुरुष

→ नामकरण दुभा ⇒ इसका जन्म गुफा में हुआ इसलिए गुहादित्य/गुहिलादित्य कहा जाता था ।

बप्पा रावल

→ वास्तविक नाम ⇒ **कालभोज / कालाभोज**

→ गुरु ⇒ **हारित ऋषि** ⇒ गरीब भक्त थे
→ इसी बप्पा रावल की गाय परी थी ।

→ नाम दिया = गुरु हरित त्रयर्षि ने बप्पा रावल दिया

→ ^{JM} रणडपुर प्रशासन में बप्पा रावल और कालभोज दोनों अलग-अलग थे।

→ गुरु हरित त्रयर्षि के आशीर्वाद से चित्तोज जीता 134 ई. में मानमौर्य की हराकर

→ राजधानी बनारस = नागढा (उदयपुर)

→ निर्माण = एकलिंगजी मंदिर (मंदिर = कैलाशपुरी = उदयपुर)

→ यह गुहिलवंश का कुलदेवता था

→ राजा स्वयं की एकलिंग जी का दीवान मानते थे।

→ बप्पा रावल का उपनाम = चम्कुरे
= चालुक्य मर्दान

→ बप्पा द्वारा प्रारम्भ की गई उपाधि = रावल

note 1 एकलिंग जी की मीराज का वास्तविक शासक मानते हैं। जबकि राजा स्वयं की इसका दीवान मानते हैं।

note 2 रावल = बप्पा रावल द्वारा मीराज शासकी में चलाई गई उपाधि जिसे राजा अपनी नाम के साथ प्रयोग करते थे

note 3 आसक्त लेना = मीराज का उत्पन्न राजा पुत्र में जानें से पहले एकलिंगजी के मंदिर में आशीर्वाद व अनुमति लेना था।

→ निर्माण = सहस्रबाहु मंदिर / सात बहू मंदिर (मंदिर = नागढा (उदयपुर))

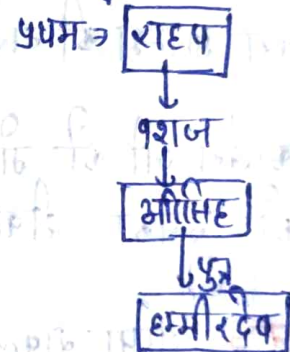
अल्लख

- इसका दूसरा नाम = भालुराव
- दूसरी राजधानी = आहड (उदयपुर)
- चलाई गई = नीरशाही प्रथा
- शाही की = दूणी राजकुमारी (हरिदादेवी से की)

→ राजस्थान का पहला अन्तर्राष्ट्रीय विवाह था
note = भारत में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय विवाह उद्या = चक्रवर्तनमयीपनी

वर्षासिंह

- 2 पुत्र =
 - क्षेमसिंह = इसे मैवाड़ का शासक बनाया
 - राहप = यह गुस्ताहीडा चला गया = तीसीहा गाँव उदयपुर



क्षेमसिंह

रावल जैत्रसिंह (12-13) (53)

- जानकारी मिली = हमीरमद मदन का ग्रहण → लेखक = जयसिंह सूरि
- समकालीन सुल्तान = इल्तुतमिश (1211-36)

↓ आक्रमण किया

1231 - भूतला का पुद्द



note ⇒ भूतला खुद से लीटने हुए इल्लतुमिश नागदा में लूटपाट मचा देता है।
तो नागदा तहस महस कर देता है।

⇒ जैत्रासिंह ने नई राजधानी बनवाई = चितीगढ़

= note = महपगुगीन मीवाड के इतिहास में जैत्रासिंह का उल स्वर्णकाल /
golden time कहा गया।

जैत्रासिंह (1253-13)

→ रानी = जयतल्ल देवी → निर्माण → श्याम पार्षनाथ मंदिर (चितीगढ़)
→ इसके काल में लिखा गया मीवाड का पहला चित्रित ग्रंथ
⇒ श्रावड प्रतिमग सूत्र धूर्ति

→ note = मीवाड का पहला चित्रित ग्रंथ था।

→ लिखा गया = भाहड (उदयपुर)

→ लेखक = कुमलचन्द्र ने 1260 में लिखा गया।

समरासिंह (1213-1301)

→ इसने जीव हिमां पर रीड लगाई

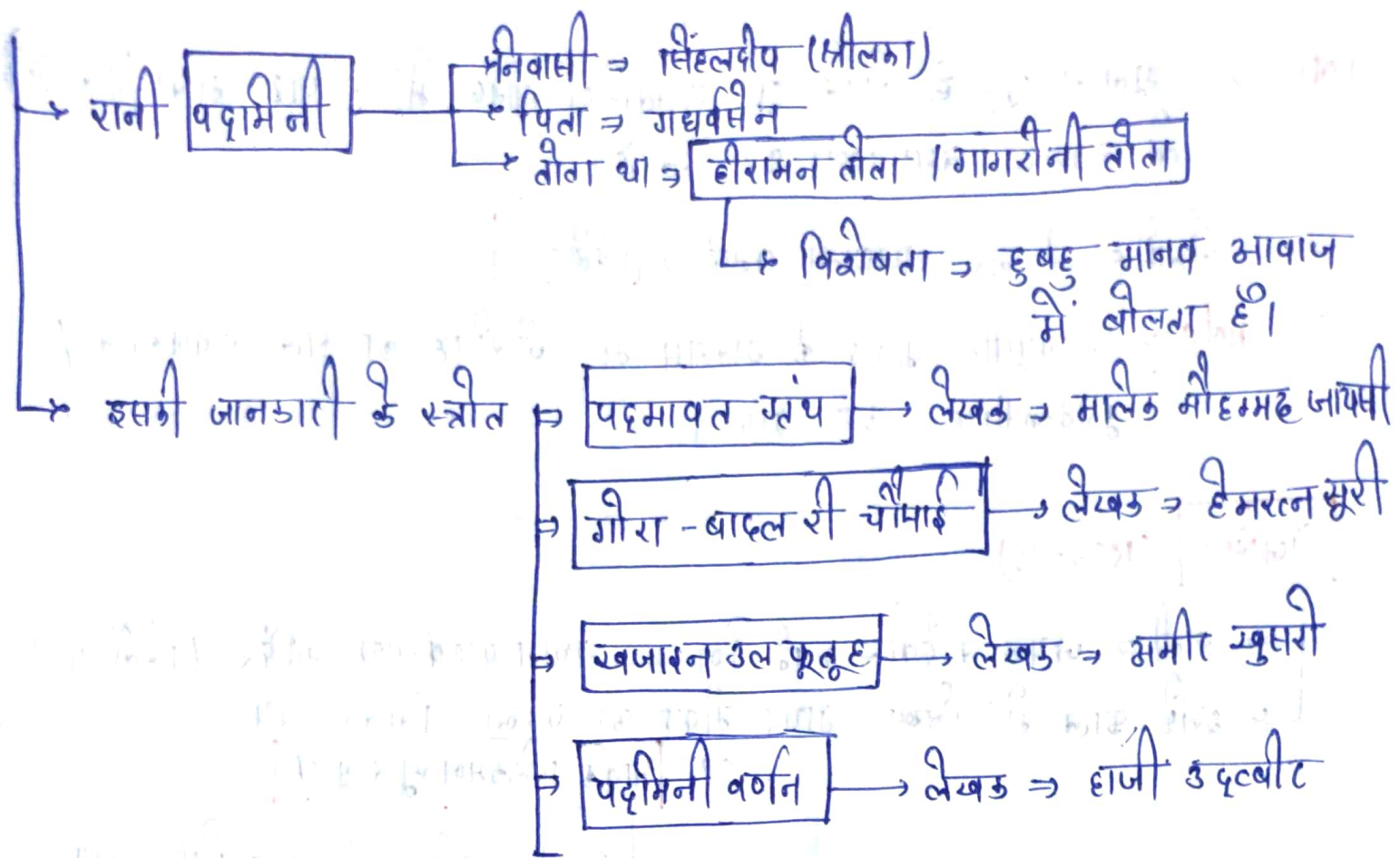
→ 2 पुत्र
→ रतनासिंह
→ कुमरुण = यह नेपाल चला गया।

रावल रतनासिंह (1301-03)

→ सेनापति =
→ गौरा
→ बादल

→ निर्माण कराया = बादल महल
→ पद्मिनी महल

→ गुरु = राघव चेतन



1303 चित्तौड़गढ़ का युद्ध

रतनसिंह
↳ हार

मलाउद्दीन खिलजी
↳ जीत

⇒ A.K ने 28 Jun 1303 को चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया or 26 Aug 1303 को A.K ने चित्तौड़ पर अधिकार किया।

⇒ A.K ने 8 माह के घेराव के बाद चित्तौड़ पर अधिकार किया।

⇒ रतनसिंह के नेतृत्व में राजपूत कैसरिया पगड़ी पहनकर लड़ते हुए मारे गए थे जिसे कैसरिया कहना कहते हैं।

⇒ युद्ध में हार के बाद पद्मिनी के नेतृत्व में 1600 महिलाओं ने भागनेकुण्ड में कूदकर जीहर दिया था।

- यहाँ राजस्थान का दूसरा शाका हुआ था [NOTE - कैसरिया + जौहर = शाका]
- रतनासिंह "रावल शाखा" का मान्य शासक था।
- A.K ने चित्तौड़गढ़ दिया सौपा पुत्र = खिज खाँ की
- NOTE → A.K ने पुत्र खिज खाँ के नाम पर चित्तौड़ का नाम रखा = खिजवाह
- खिज खाँ ने 1313 में चित्तौड़गढ़ जालौर के मुघाला मालदेव / मालदेव सीनगरा की सौपा दिया।
- 1326 में मुघाला मालदेव ने चित्तौड़गढ़ पुर्ग की भर्पने पुत्र जयसिंह / जैसा / बनवीर की सौपा था।
- कर्नल जेम्स टाउने चित्तौड़गढ़ की नाम दिया = **जौहरनगरी**
- इस पुरी (घटना) की सूर्यमल्ल मिश्रण ने काल्पनिक बताया था झूठी बताया जबकि दशरथ शर्मा ने सच्ची घटना बताया था।

हमीरदेव / सिसौदिया (1326-64)

- कौन था = सिसौदागाँव (उदयपुर) के भीरसिंह की पुत्र था
- 1326 में इसने जैसा / जयसिंह / बनवीर की परास्त किया। भाईदार किया = चित्तौड़गढ़
- उपनाम
 - विषमवादी पंचानन → अर्थ = विषम परिस्थिति से लड़ने वाला
 - प्रबल हिन्दू शासक
 - वीर राजा
- प्रारम्भ किया =
 - गुहिल वंश के स्थान पर नया वंश सिसौदिया चलाया।
 - रावल शाखा के स्थान पर नया चलाया = राणा / महाराणा शाखा
- इसे मेवाड़ का उद्धारक I कहा गया।

NOTE → मेवाड़ का दूसरा उद्धारक भामाशाह की कहते हैं।

रखैता / क्षेत्रसिंह (1364-82)

- दासी पुत्र = चाचा, मेरा, मट्टा पंवार
- रानी पुत्र = लक्ष्मसिंह / लाखा

राणा लाखा / लक्ष्मसिंह (1382-1421)

- इसके काल में एरीया की सबसे बड़ी चांदी खान निकाली = जावर खान (उदयपुर)
- इसके काल में निर्मित हुई = **पिछोला झील (उदयपुर)**
 - निर्माण $\left\{ \begin{array}{l} \text{पिछू} \\ \text{अक्षतरमल} \end{array} \right\} > \text{बजारी शराब की स्मृति में}$
- पुत्र = **कुंवर चूड़ा**
- कुंवर चूड़ा के प्रपास से शादी हुई। = **राणा लाखा or हसाबाई (जीधपुर की राजकुमारी)**
 - पुत्र = **मोडल**

note ⇒ कुंवर चूड़ा की कथा गया ⇒ राजा का भिष्मपितामह

मोडल (1421-33)

- विरोधी थे ⇒ चाचा + मेरा + मट्टा पंवार
- यह भूतपू में शासक बना था।
- प्रारम्भ संरक्षक बनाया = **कुंवर चूड़ा**
 - इसपर हसाबाई की संहत था।
 - यह माण्डू (गुजरात) चला गया।
- नया संरक्षक बनाया **रणमल की**

- निर्माण करवाया था ⇒ सामीहेश्वर मंदिर (चिन्मय) ⇒ दूसरा नाम ⇒ मोडल का मंदिर
- निर्माण करवाया ⇒ एकलिंगी मंदिर का परकीरा / चरदीवारी बनवाई इसकी पूर्ण करवाया ⇒ राणा कुम्भा
- राणा कुम्भा
- मोडल की क्षति थी ⇒ 1433 में जीलवाडा (राजसंभद्र) में पाचा + भैरा + महेंद्रा पवार ने की थी।

राणा कुम्भा (1433-68)

- शासक बना ⇒ भल्पाधूमि
- सरदार बना ⇒ रणमल राठौर
- शौडीन था ⇒ वीणावाडक
- उपनाम ⇒^m भामिनव भरताचार्य
 - ⇒ हिन्दु सुखान
 - ⇒ राजगुरु
 - ⇒ व्यापगुरु
 - ⇒ दानगुरु
 - ⇒ बाणौरासो

→ इसने पूछी की वापस बुलाया था।

दरबारी विद्वान

- ⇒ कान्हा व्यास → ग्रंथ लिखा → एकलिंग महात्म्य
- ⇒ मण्डन → ग्रंथ लिखा → रत्नमण्डन + वास्तुमण्डन + कीदण्डमण्डन + रूपरसावतार
- ⇒ गोविन्द → ग्रंथ लिखा → कुलानिधि

- स्वयं कुम्भा ने पुस्तक लिखी ⇒ संगीतराज
 ⇒ संगीतमीमांसा
 ⇒ संगीत सुधा
 ⇒ सूड प्रबंध / सुधा प्रबंध
 ⇒ कामराज रतिसार

⇒ जानकारी मिली ⇒ ३ भामलदास की पुस्तक
 वीरविनीत

इस पुस्तक के अनुसार राज० में कुल ४५ दुर्ग हैं। इनमें से ३२ दुर्ग
 अकेले कुम्भा ने बनवाये थे।

कुम्भा का काल राज० में स्थापत्यकला का स्वर्णकाल कहा जाता था।

⇒ कुम्भा ने राज० में निर्माण करवाया था

- भीमर का किला (दुर्गापुर)
- भयलगाद का किला (सिरौछि)
- कुमेलगाद का किला (राजसमंद)

- निर्माण का समय ⇒ १५५८
- नामकरण दुभा ⇒ रानी कुमेलवती के नाम पर रखा गया।
- तारीखी ⇒ मंठन
- इसमें कुम्भा ने अपना निवास बनाया था ⇒ कुयरागाद महल

→ उपनाम ⇒ मेवाड़
 की भाँख

⇒ शासक बनते हैं भादशा दिथा ⇒ चाचा + मेरा + मंछपा पवार

- इन पिता के हत्यारी की कद करने का।
- तीनों भागकर मालवा शासक महमूद खिलजी के पास दीप जाते हैं।

↓
1437 सारंगपुर का पुद्द (M.P)

कुम्भा

जीत

महमुद खिलजी

हार

⇒ पुद्द में विजय के उपलक्ष्य में निर्माण कराया ⇒ विजयस्तंभ / किर्तिस्तम्भ
निर्मित

⇒ निर्माणकर्ता ⇒ कुम्भा

⇒ वास्तुकार ⇒ जीता + पीमा + पूजा

⇒ मांजिल ⇒ 9 मांजिल

⇒ कहा गया ⇒ कुनल जेम्स यॉने कहा ⇒ कुतुबमीनार के समान

⇒ गर्जन ने कहा ⇒ भारतीय मूर्तिकला का विश्वकीर्ष / अजायबघर

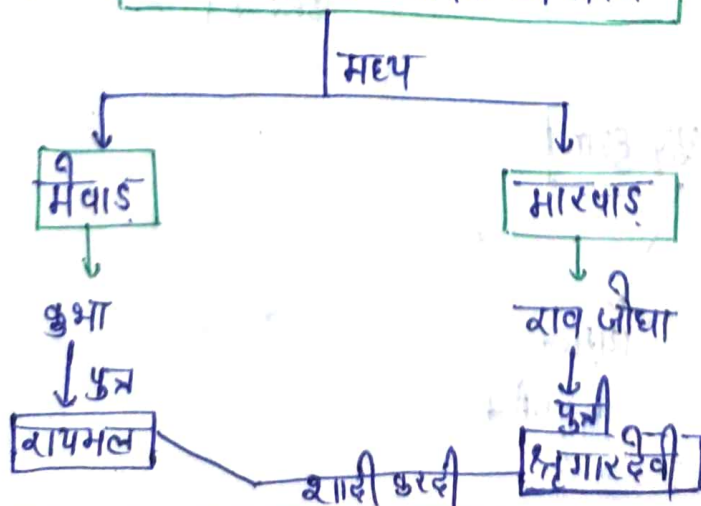
⇒ इसकी प्रतीक माना राज० पुलिस का ।

⇒ 3 मांजिल पर 9 बार बिल्लीला लिखा है। इस पर 15 Aug 1949 को डाक टिकट चलाया गया जो राज० में सर्वप्रथम किसी इमारत पर चलाई गई

⇒ इसका पुनः निर्माण था मरम्मतकर्ता ⇒ स्वराज सिंह थे ।

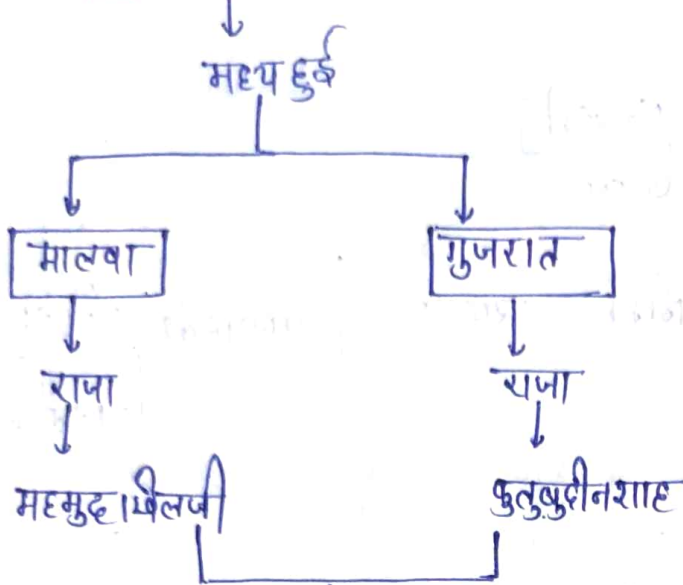
⇒ निर्माण = 1440-1448
काल

⇒ साधि करवाई ⇒ 1453 - भावल - बावल की सांघी ⇒ हसाबाई ने डखवाई



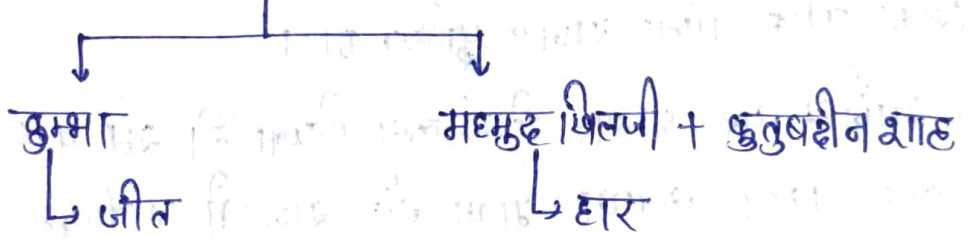
⇒ संधि के तहत मेवाड़-मारवाड़ की सीमा निर्धारित की।

⇒ 1456 - चंपनौर की संधि हुई



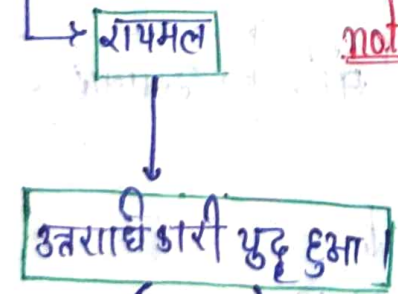
↳ उद्देश्य था ⇒ दोनों की भिलावर कुंभा की हरना।

1457 - वदनौर का युद्ध (भीलवाण)



note ⇒ इस जीत की खुशी में कुम्भा ने वदनौर में कुशलमाता का मंदिर बनवाया।

⇒ 2 पुत्र — ऊदा —> इसने कुम्भा की कपूरगढ़ महल में दलिया डर दी।



note ⇒ ऊदा की मेवाड़ का प्रथम पितृहन्ता कहे हैं।



⇒ ठाढ़ा की मृत्यु 1473 में बिजली पड़ने से मृत्यु हो गई।

⇒ **राणा राघमल (1473-1509)**

→ निर्माण करवाया ⇒ राम + राधाम + संकर तालाबों के

→ पुत्र → **पृथ्वीराज**

→ जयमल

→ सांगा / सगामासिंह

→ उपनाम ⇒ उड़ना राजकुमार

→ रानी ⇒ तारा ⇒ इसके लिए पृथ्वीराज ने अजमेर किले के आन्तरिक भाग का निर्माण करवाया।

→ इसी के नाम पर अजमेर दुर्ग का नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया।

→ पृथ्वीराज की धतूरी ⇒ कुमलगढ़

note ⇒ भीमली चारणी और मारु बाघान ने भविष्यवाणी की (राजवंशभेद) राघमल के तीनों पुत्रों में से सबसे छोटा पुत्र सांगा मैवाड़ का राजा बनेगा।

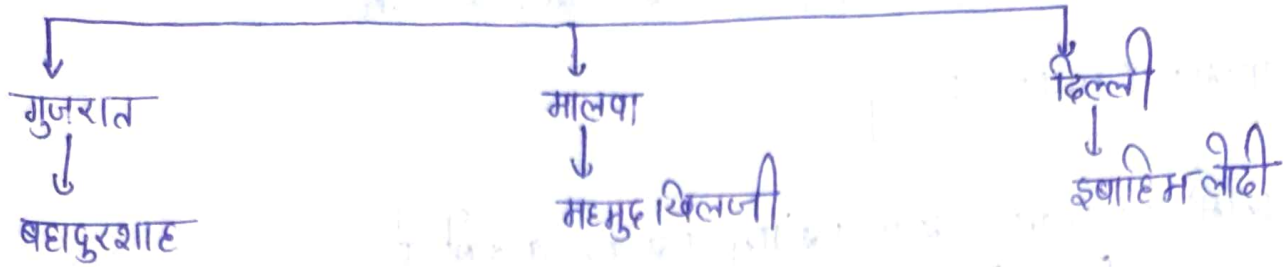
note ⇒ सांगा अपनी भाईयों से जान बचाकर अजमेर में कुमचन्द्र पंवार के यहाँ बरान लेता है।

राणा सांगा (1509-28)

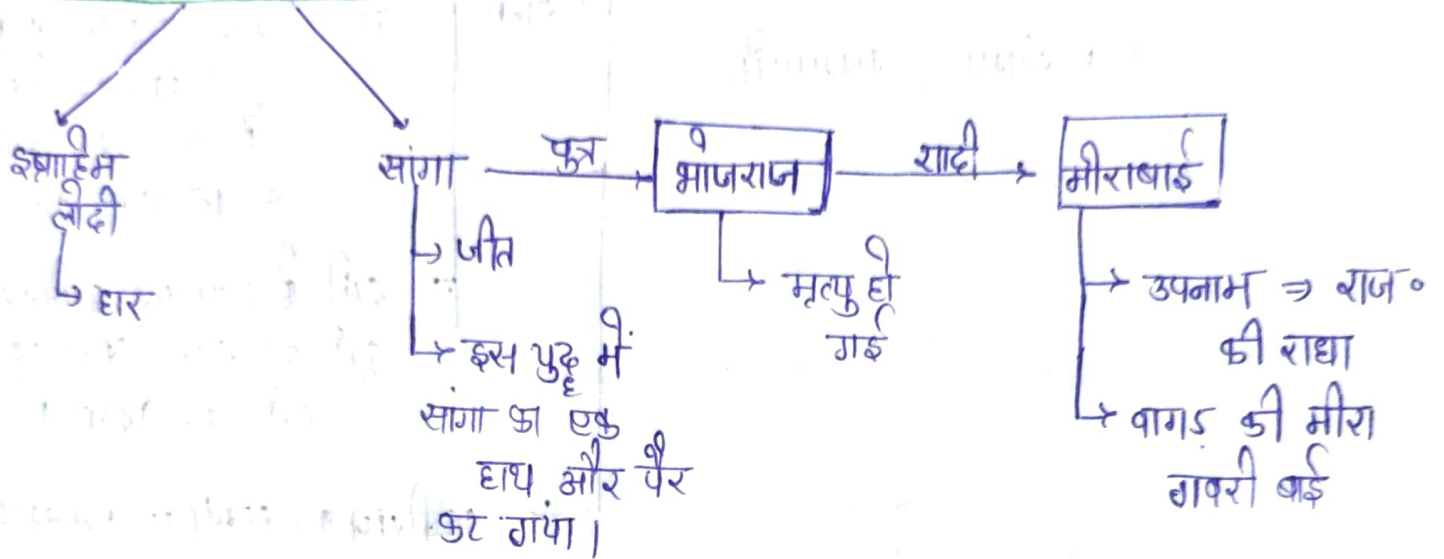
→ इसके लिए कपन ⇒ हराविलास शारदा ने कुछ "राज" का सर्पक्षित शासक राणा सांगा था

→ K.M मुशी ने कुछ ⇒ जैसे-जैसे सांगा राजा ने बन गया लेकिन उसके राज्य के चारों तरफ आक्रामक राजाओं का अधिकार था।

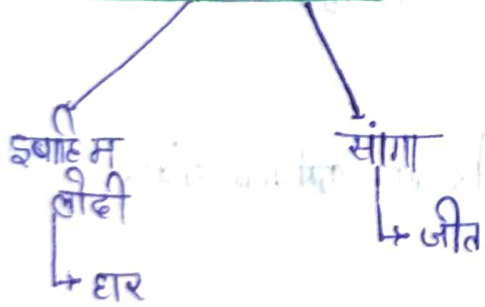
→ समकालीन शासक थे।



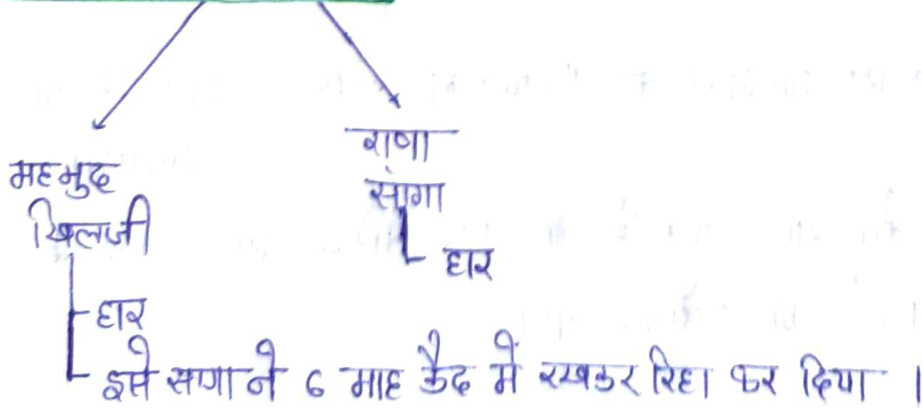
1517- खातौली का पुट्ट



1518- वाण्डी का पुट्ट (घोलपुर)



1519 मागरीन का पुट्ट आलावाड



15१6 पानीपत का युद्ध

बाबर

जीत

इब्राहिम लोदी

हार

इस युद्ध में बाबर ने

तुलसुमा पट्टरि का

प्रयोग किया।

→ अर्घ = तेल + गोली + बंदूक का उपयोग किया गया।

16 फरवरी 15१7 - अफाना का युद्ध

बाबर

सांगा

17 मार्च 15१7 - खानवा युद्ध

राणा सांगा

हार

→ युद्ध से पहले प्रथा चलाई =

बाबर = इसने धोखा की

जीत

→ शराब का सेवन नहीं करता।

→ तमांग कर / भुंगी कर माफ कर देगा।

→ जेदाद / धर्मपुष्ट कैं।

पानी पेरबन की प्रथा

→ अर्घ = पत्र लिखकर राजपुत राजाओं को युद्ध के लिए आमंत्रित किया।

→ पानी पेरबन प्रथा के तहत भाग लेने वाले

शासक

→ जयपुर = पृथ्वीराज श्यवाह

→ जोधपुर = राव मालदेव

→ बीकानेर = कल्याणमल

→ मेवात = हसन खान मेवाती

→ कोठियावाड़ = (U.P)

→ सलहंदाई तैवर इस सांगा का पिशासघाती था।

= जो बीच युद्ध में बाबर से मिल गया था।
 = मेवात = हसनखा मेवाती = खानवा युद्ध में
 सांगा की तरफ से भाग लेने
 वाला एकमात्र मुस्लिम था।

= कुठियावाड़ = शाला भज्जा = इसने सांगा का
 अन्न धारण किया था।

note = इस युद्ध में बाबर ने 1 लाख राजपूतों के सर काटवाए और गाजी की हत्या
 धारण की।

note = सांगा की घायल भवस्था में बसवा (दीला) ले जाया गया और एलियपुर (M.P.)
 में सरकारी द्वारा सांगा की जहर दे दिया गया।

note = सांगा की 1528 में कालपी (U.P.) में मृत्यु हो गई।
 = सांगा की सैनिकों का भगनावेश कहते हैं। और हिन्दुपति कहा गया था।

विक्रमादित्य (1531-36)

- संरक्षक मां = कमविती / कणविती
- छोटा भाई = उदयसिंह
- सेनापति बनाया = देवलिखा प्रतापगढ़ का बाघसिंह
- समकालीन संघ = गुजरात का बहादुरशाह का आक्रमण

1533 - चित्तौड़गढ़ का युद्ध

विक्रमादित्य

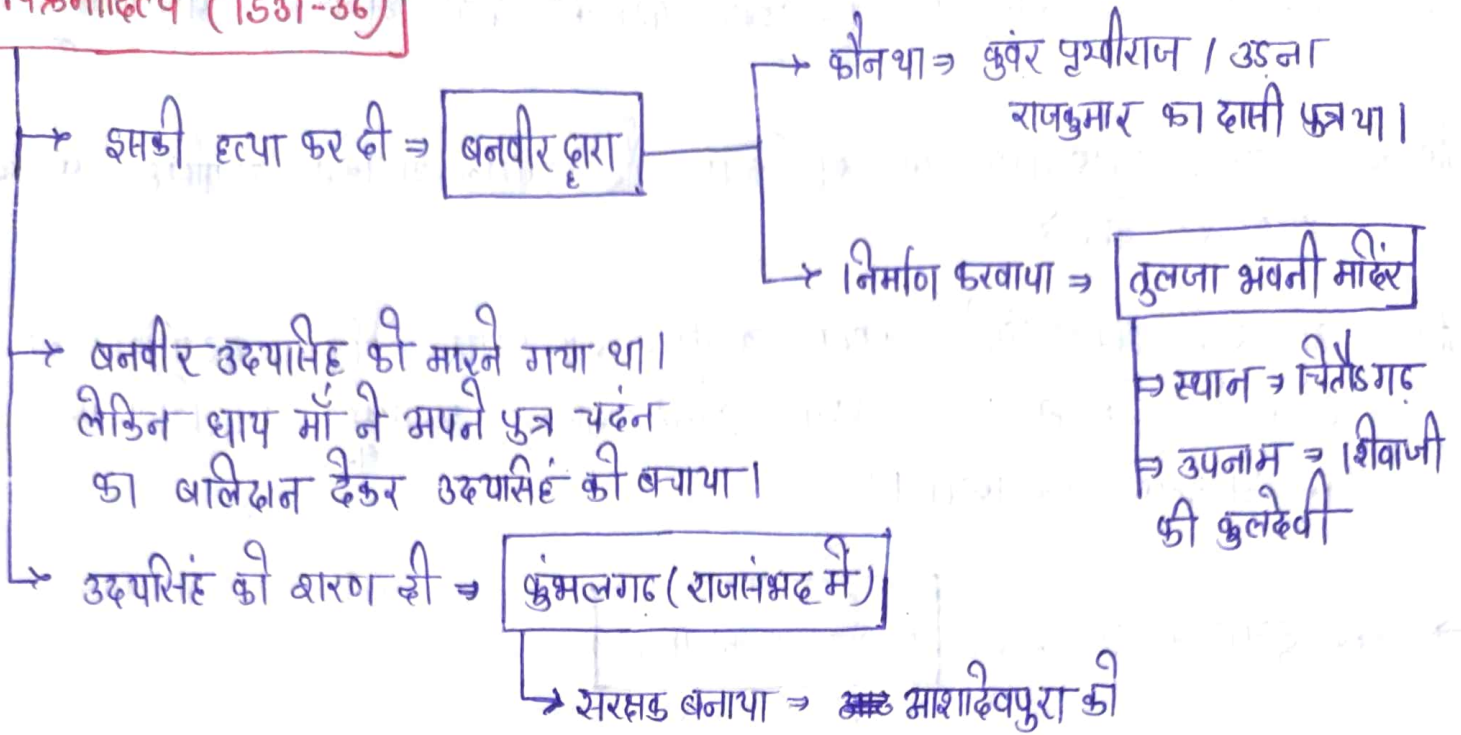
→ हार

बहादुरशाह

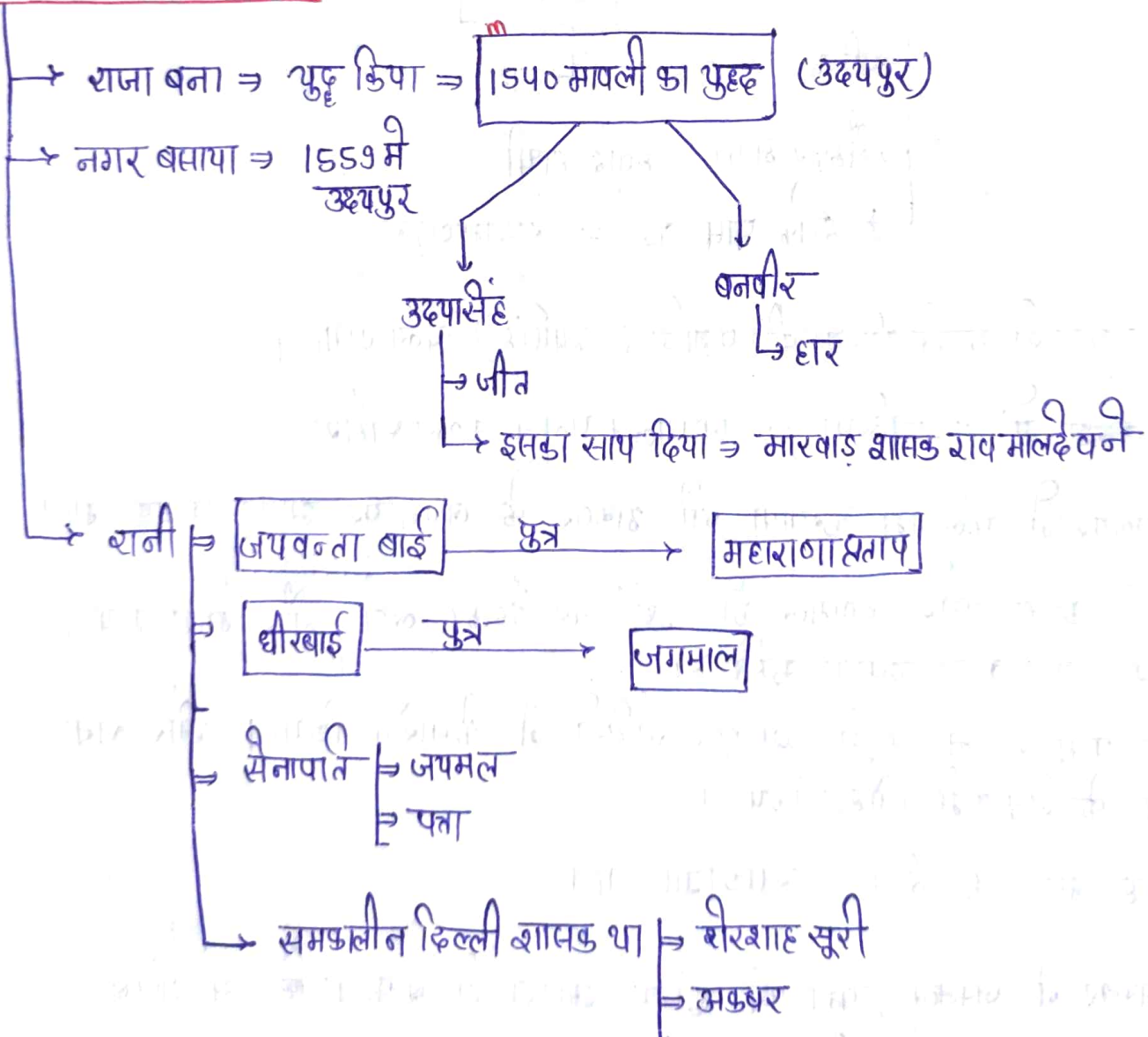
→ जीत

note = इस युद्ध में विक्रमादित्य दुर्ग की जिम्मेदारी सेनापति बाघसिंह की
 सौंप कर

विक्रमादित्य (1531-36)



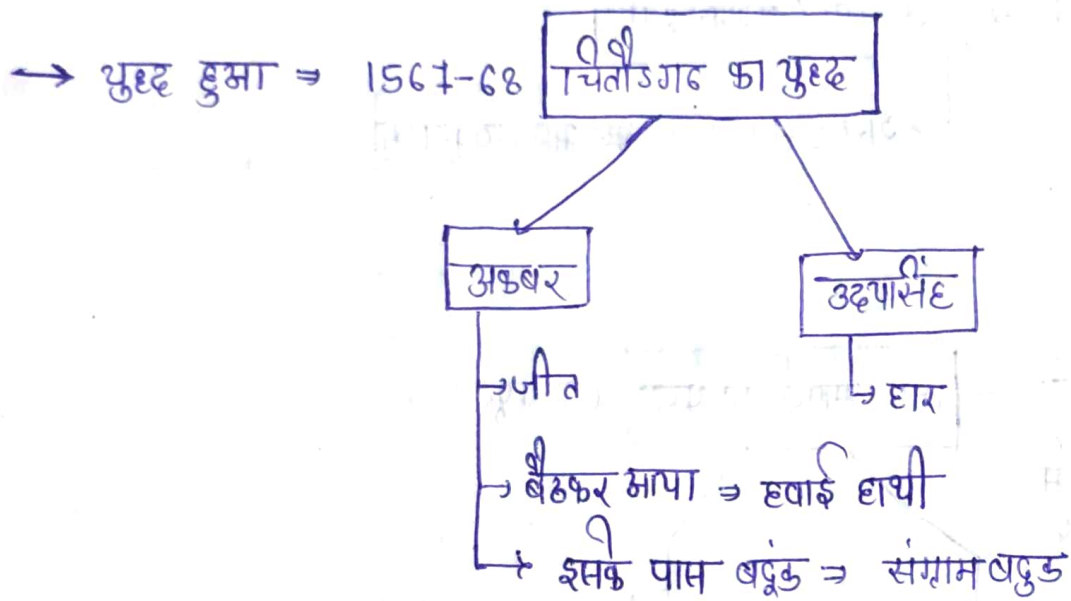
उदयसिंह (1537-72)



→ उदयसिंह ने ब्रह्मशाह सूरी की चिन्तागढ़ दुर्ग की चाबी भेजकर अधीनता स्वीकार की।

note → अकबर द्वारा मेरठ पर आक्रमण किया और जयमल भागकर उदयसिंह के यहाँ शरण ले लेता है।

note → अकबर ने अपना पिछाई जयमल उदयसिंह से मागा लेकिन उदयसिंह ने सौंपने से मना कर दिया जिसके कारण ~~उदयसिंह~~ मकबर ने चिन्तागढ़ पर आक्रमण कर दिया।



→ उदयसिंह युद्ध से पहले गिरवा की पहाड़ी (उदयसिंह) चला गया।

→ युद्ध से ~~पहले~~ में भाग लिया = जयमल + पता + फल्ला राठौर

→ इसमें मकबर ने फल्ले माम करवाया जो मकबर के जीवन पर अमिट कलंक माना गया था।

→ इस युद्ध में फल्ला राठौर जयमल की कंधी पर बैठा लड़ा और मारा गया।
जिसे 5 हाथी वाला देवता कहते हैं।

→ जयमल पता के नेतृत्व में राजपूत सैनिकी ने कैसरिया किया। और शनी फुलकंपर के नेतृत्व में जोहर किया।

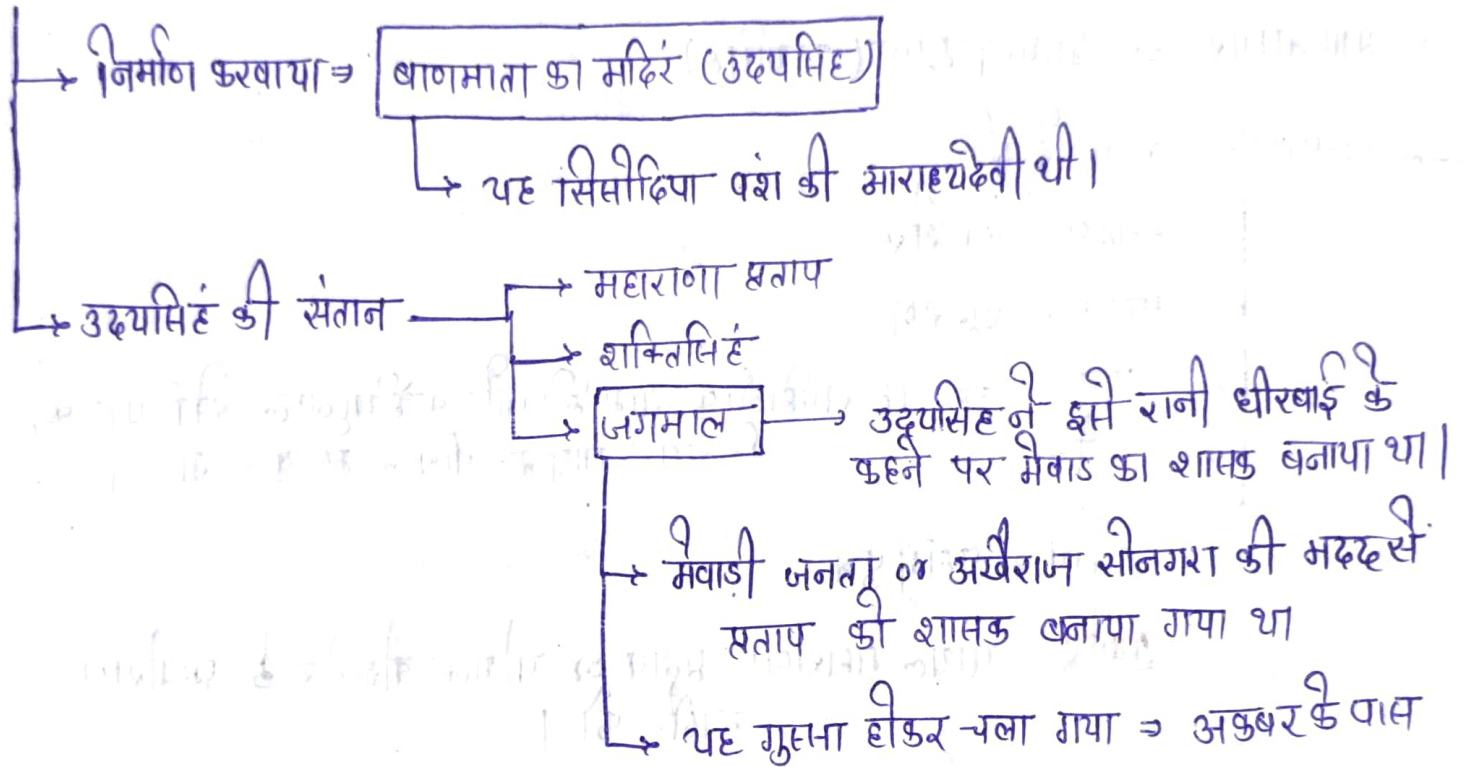
note यह मेवाड़ का तीसरा साकाशा था।

note → अकबर ने जयमल, पता की मूर्तियाँ आगरा में बनाई जिन्हें औरंगजेब द्वारा तोड़ दिया।

note ⇒ वर्तमान में जयमल पता भी गजराह मूर्तियां बीकानेर के जूनागढ़ दुर्ग में स्थित हैं। जो रायसिंह ने बनवाई थी।

note ⇒ कर्नल जेम्स टॉप ने कछे सांगा और प्रताप के मध्य उदयसिंह न होता तो मेवाड़ का इतिहास उज्ज्वल होता।

note ⇒ जयमलदास ने कछे उदयसिंह का पुट्ट स्थल छोड़कर जाना उसकी कायरता थी।



महाराणा प्रताप (1512-99) 25 वर्ष तक राजा रहे थे।

- जन्म ⇒ कुमलगढ़ दुर्ग के कथारगढ़ महल के बादल महल में
- जन्म का समय ⇒ 9 मई 1540 / ज्यैष्ठ शुक्ल ॥
- माँ ⇒ जयवन्ताबाई
- 2 भाई ⇒ शक्तिसिंह
जगमाल > इन्होंने शरण ली ⇒ अकबर के पास
- रानी ⇒ अजबदे पवार
- पुत्र ⇒ अमरासिंह I

हाथी → लूणा
→ रामप्रसाद → अकबर ने नया नाम रखा → पीर प्रसाद

→ बीडा = चेतक → छतरी = बलीचागाँव (राजसमंद)

→ हरबारी विज्ञान = चक्रपाणि मिश्र ग्रंथ → विश्ववल्लभ

→ इससे तलवार बाधने वाला ब्राह्मण था → कृष्णदास ब्राह्मण था

→ शास्त्रागार = मापरा गुफा (उदयपिह)

→ उपनाम = मेवाड़ केसरी
→ हल्दीघाटी का शेर
→ महानतम सुरताण

→ पायल = यह साहित्यिक नाम है। जी कर्णैयलाल सेठिया की
→ बीडा किताब पायल-पीयल में कहा गया।

→ अर्थ = पहंगी पुत्र

note → पायल महाराणा प्रताप or पीयल बीकानेर के पृथ्वीराज राठीर की।

→ मूलपु = 19 Jan 1597 में चावण्ड (उदयपुर)

→ छतरी = बाण्डौली (उदयपुर)

→ प्रताप का स्मारक = मोरी-मगरी (उदयपुर) में फतहसागर झील पर

→ समकालीन बाबरनाह = अकबर (1556-1605)

→ अकबर ने प्रताप की समझाने 4 शिष्टमंडल भेजे।

J → जलालखा → 1572

M → मानसिंह

P → भगवन्तदास

T → टीकरमल

→ 1573

note ⇒ बगलौड़ भरघो पुरख - अमरकाल्यपेशावाले के अनुसार मानसिंह की मुलाकात उदयसागर झील पर अमरसिंह से हुई थी। इसमें अमरसिंह ने मानसिंह का अपमान कर दिया तो मानसिंह ने पुरख की चेलावनी दे डाली।

18 जून 1576 हलीधारी का युद्ध

महाराणा प्रताप

→ घोड़ा = चैतक
→ ~~जी~~ धार

मानसिंह

→ हाथी = मर्दाना
→ ~~हथ~~ जीत

⇒ झाला बिहा / मन्ना ⇒ मिहतर खाँ ⇒ भासफ खाँ / हाडिम खासूर
+
भीलपूजा

⇒ इस युद्ध में अकबर ने मानसिंह की भाईसा दिया महाराणा प्रताप की ऊँट करने का

⇒ इस युद्ध में प्रताप का छत्र धारण किया = झाला बिहा / झाला मन्ना ने

⇒ इस युद्ध में प्रताप का एकमात्र मुस्लिम सेनापति = हाडिम खाँ सूर था।
और भील सेनापति = पूजा था

⇒ इस युद्ध में मिहतर खाँ ने अकबर के भाने की झूठी भणवाह फैलाई

⇒ इस युद्ध में भागनी हुई मुगल सेना में भासफ खाँ ने जिधर का नारा दिया था

note ⇒ मानसिंह इस युद्ध में प्रताप का हाथी अकबर ले गया और अकबर ने इसका नाम पीरप्ताह रखा।

note ⇒ चापल घोड़ा चैतक प्रताप की बलीचा गाँव तक ले जाता था (राजसमूह)

जहाँ चेतक मर्तिम सास लेता है।

⇒ बलीचा में प्रताप की मुलाकात अपनी भाई शक्ति सिंह से हुई जो अपना धौज प्रताप की देता है। जिससे प्रताप कीलपारी गाँव (उदयपुर) में शरण लेता है। और इलाज करवाता है।

अलवदायून्

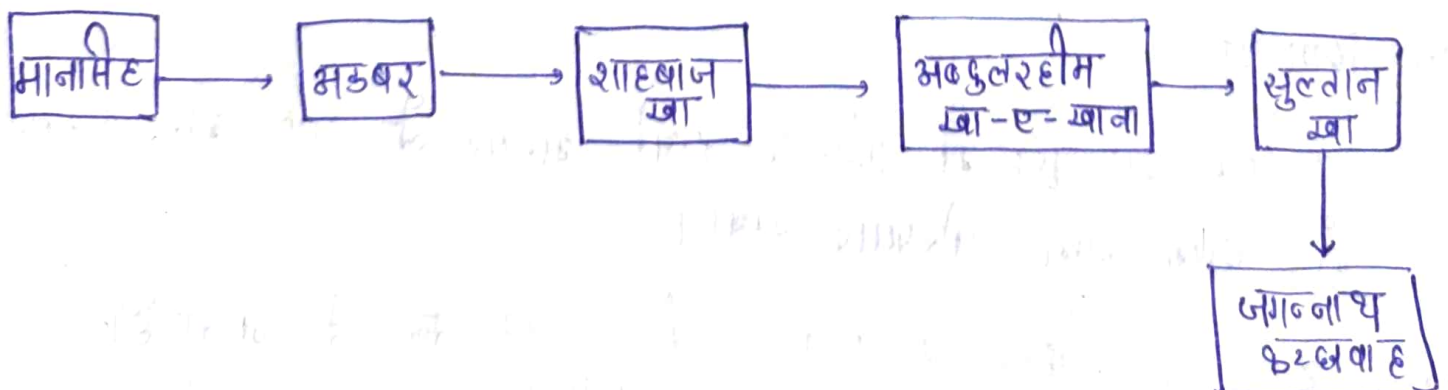
- कौन था ⇒ अकबर का दरबारी विद्वान था।
- यह हल्दीघाटी में उल्लिखित एकमात्र विद्वान था
- इसने हल्दीघाटी युद्ध में राजपूतों के खून से अपनी दाढ़ी रंगी थी।
- पुस्तक लिखी ⇒ मुन्तखब उल तवारीख

हल्दीघाटी युद्ध की दिए गए नाम

- कर्नल जेम्स टाउट ने कहा ⇒ मेवाड़ की धर्मोपल्ली / धर्मोपाली
- अलवदायून् ने कहा ⇒ गोगुन्दा का युद्ध
- अबुल फजल ने कहा ⇒ खमनौर का युद्ध

note ⇒ युद्ध के दौरान प्रताप की मानसिंह द्वारा कैद ना किए जाने पर अकबर ने मानसिंह की मदद से निकाल दिया।

⇒ अकबर द्वारा मेवाड़ अभियान पर क्रमशः भोजी सेनापति ⇒



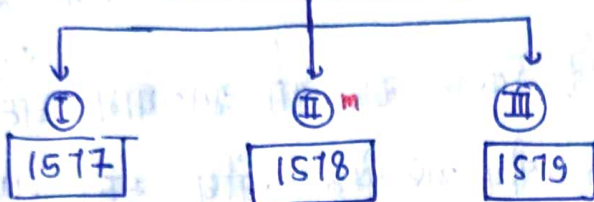
अकबर

→ यह 1516 में मेवाड़ अभियान पर भाया।

⇒ इन्हीं उदयपुर जीत और उदयपुर का नाम रखा = मीरजमहाबाद

⇒ यह प्रताप की वंदी बनाने में असफल हुए।

⇒ अकबर ने सर्वाधिक उबार • मेवाड़ अभियान पर भेजा = शाहबाज खाँ की



3 April 1578 कुमलगढ़ का पृथ्वी

शाहबाज
खाँ
जीत

भाण सीतंगा • जैन धर्म
महाराणा
प्रताप की
मामा

राज्य में इतिहास में कुमलगढ़ की केवल एक बार हि जीता गया था।

⇒ प्रताप की भार्येक सहायता की = भामराहा ने 1580 में

⇒ महाराणा प्रताप ने महासानी रामा के स्थान पर भामराहा को अपना सलाहकार नियुक्त किया।

⇒ इन दोनों की मुलाकात हुई =

पाली
⇒ मूल निवासी = पाली

⇒ उपनाम = मेवाड़ का दूसरा उद्धारक
⇒ मेवाड़ का अनवीर कर्ण

⇒ भुवनेश्वर द्वारा प्रताप के विरुद्ध भेजा गया अंतिम सेनापति ⇒ 1584 में जगन्नाथ कुंजवाहे
 लेकिन यह इस अभियान पर मारा गया

⇒ प्रताप ने 1585 में राजधानी बनाई ⇒ **पाण्ड (उदुपपुर)**

→ मेवाड़ की संस्कृतकालीन राजधानी
 → राजधानी 1585-1615 तक
 → 30 वर्ष तक राजधानी

⇒ 1586-96 तक भुवनेश्वर ने प्रताप के विरुद्ध कोई भी अभियान नहीं किया।

note ⇒ मुगल-मेवाड़ के मध्य 10 वर्षों में अधीनस्थ संधि हुआ गया था।

note ⇒ 19 जनवरी 1591 को महारणा प्रताप के धनुष की प्रतीक्षा बंद हो गई।

अमरसिंह I (1591-1620)

→ पुत्र ⇒ कुंगरीसिंह

→ समकालीन बादशाह ⇒ अकबर (1556-1605) ⇒ इसकी मृत्यु 1605 में हो गई थी।

→ जहागीर (1605-28)

→ पुत्र ⇒ खुर्रम (शाहजहाँ)

→ सर्वप्रथम संधि हुई ⇒ 5 फरवरी 1615 मुगल-मेवाड़ संधि की।

मेवाड़ को पहला शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की ⇒ अमरसिंह I

मध्य हुई

अमरसिंह I

शुभकर्ण

हरदासशाहा

जहागीर

शीराजी

सुन्दरदासजी

note ⇒ इस संधि के दौरान अमरसिंह के तरफ से भाग लिया ⇒ शुभकर्ण
 हरदासशाहा ने जबकि जहागीर के तरफ से भाग लिया ⇒ शीराजी
 और सुन्दरदासजी ने।

note = संधि के बाद अमरसिंह ने अपना राजपाट अपने पुत्र कर्णसिंह को सौंपा और भाइयों की पदाधिकारी में चले गए जहां उनकी 1620 में मृत्यु हो गई।

note = अमरसिंह की छतरी भाइयों (उदयपुर) में स्थित है।

कर्णसिंह (1620-28)

- निर्माण = प्रारम्भ कराया =

→ जगमोहर

→ जगनिवास

 > महली का पिछोला जील (उदयपुर)
- note = इन महली का निर्माण पूर्ण कराया = जगतसिंह ने
- मेवाड़ का पहला शासक जो मुगल दरबार में उपस्थित हो।
- मनसबदारी = 5000 की यह सम्मान प्राप्त करने वाला मेवाड़ का पहला शासक था
- जगतसिंह I
- पुत्र =

जगतसिंह (1628-52)

- घायल = नौपूरारि = घायलों का मंदिर = उदयपुर
- धरना = इसने मुगल मेवाड़ संधि की
- इसके लिए जगतसिंह ने ब्रिगेड गढ़ दुर्ग की मरम्मत करवाकर
- पुत्र = राजसिंह

राजसिंह (1652-80)

- उपनाम = विजयकृत (वाक्यपुत्र के कारण)
- जील का निर्माता शासक
- दार्शनिक शासक

- निर्माण ⇒ **राजसंभद्र झील (राजसंभद्र)** ⇒ इसी गोमती नदी का जल रीझकर बनाया गया
- ⇒ राज० का एकमात्र बिला जिसका नाम झील के नाम पर पड़ा था ⇒ **राजसंभद्र**
- रानी ⇒ **शमरसिंह** ⇒ निर्माण करवाया ⇒ त्रिमुखी बावड़ी (डुंगरपुर)
- समकालीन बादशाह ⇒ **भौरगजेब** (1658-1707)

- ⇒ इसने भारत में **जजिया कर** लगाया जिसका राजसिंह ने विरोध किया।
- ⇒ गौर मुस्लिम जाति पर लगाया जाने वाला राजनैतिक कर
- ⇒ इसने हिन्दु मंदिर तोड़ने की घोषणा की तो विरोध में राजसिंह ने **मंदिर** बनवाए
- m. ⇒ श्रीनाथजी मंदिर ⇒ नाथद्वारा
- ⇒ दारगाघीरा मंदिर ⇒ कंकरीली (राजसंभद्र)
- ⇒ मम्बे भाता का मंदिर ⇒ उदपपुर

पारमर्तिविषाद ⇒ डिरांगढ़ के शासक राजसिंह की प्रारम्भिक से विवाह करना चाहता था भौरगजेब जिसने धर्म की रक्षार्थ राजसिंह ने शादी की थी।

- ⇒ भौरगजेब ने मैवाज अभियान पर मुगल सेना भेजी थी।
- ⇒ मुगल सेना के विरुद्ध युद्ध लड़ने के लिए राजसिंह ने मदिरा दिया
- ⇒ **सलूमबठ के रतनसिंह भूण्डावत**

⇒ रानी ⇒ **संछलउवर / सलहउवर**

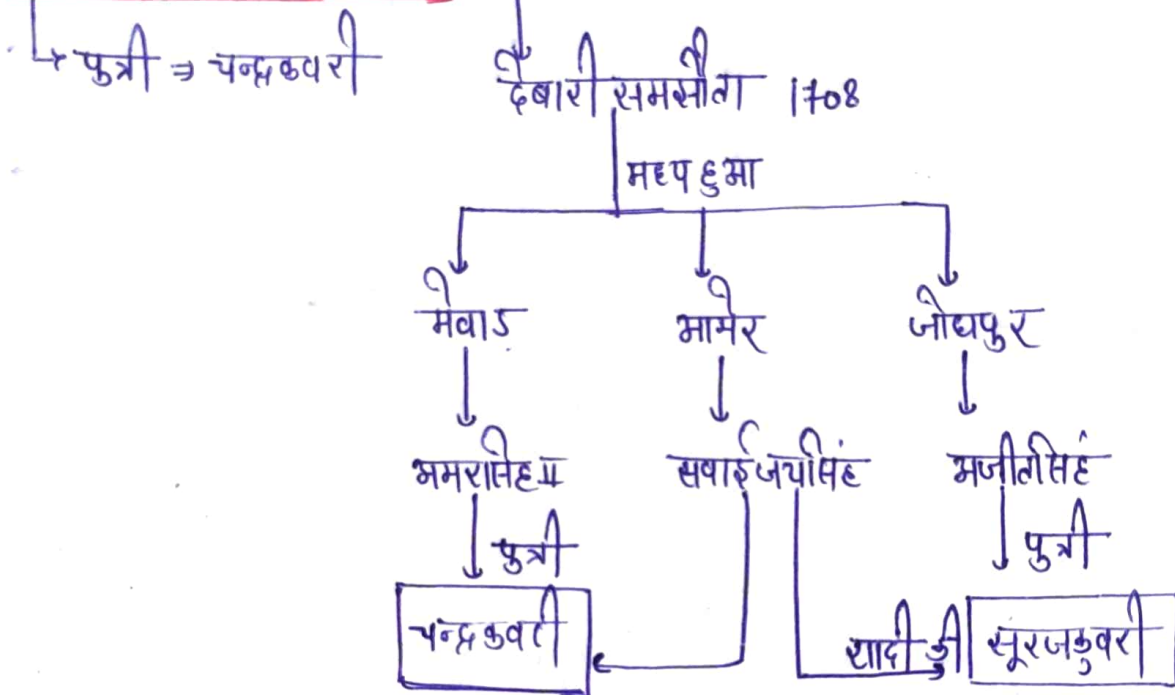
- ⇒ इसने रतनसिंह को निरानी के रूप में अपना सिर काटकर दिया था।
- ⇒ उपनाम ⇒ हाजी रानी

कहावत ⇒ भूण्डावत मागे निरानी सिर काटकर दिया क्षत्राणी

जयसिंह (1680-98)

- पुनर्भवनता स्वीकार की ⇒ औरंगजेब की।
- निर्माण करवाया ⇒ जयसमूह झील (सलूमबर) ⇒ गोमती नदी का जल रोक कर।
 - यह राज० की सबसे बड़ी मीठे पानी की कृत्रिम झील थी।

अमरसिंह II (1698-1710)



note ⇒ इस समझौते के बाद अमरसिंह ने सवाई जयसिंह की भामेर और अजीतसिंह की जोधपुर का राजा बनाया।

संग्रामसिंह (1710-34)

- पुत्र ⇒ जगतसिंह II
- निर्माण करवाया ⇒ वैद्यनाथ मंदिर (स्थान) ⇒ सीसरमा गाँव (उदयपुर)
 - इसी दीवारी पर लिखवायी ⇒ वैद्यनाथ वंशावली ⇒ लेखक
 - सहेलियों की बाग (उदयपुर)
 - रूपभट्ट

जगतसिंह II (1734-78)

→ हरबारी विद्वान = नैकराम पुस्तक जगतधिलास

→ निर्माण पूर्ण कृष्णापा = जगमदिर जगनिवास > यह पिबोला ग्रीव (उदयपुर) में स्थित है।

→ इसके काल में आयोजन हुआ = दुरडा सम्मेलन 17 July 1734 मीलबाग

- उद्देश्य = मराठी के खिलाफ राजा के शासनों का संगठन था।
- अध्यक्ष = जगतसिंह II
- असफल हुआ

(भीमसिंह (1718-1728))

→ पुत्री = कृष्णाकुमारी = स्वर्ण शादी की लेकर पुद्दह हुआ दो राजाओं में पुद्दह हुआ & राजाओं में

→ इस पुद्दह के कारण कृष्णा के पिता भीमसिंह ने जहर देकर मार दिया।

1804 - गिरीजी का पुद्दह

जीधपुर का
मानसिंह
→ दार

जयपुर का
जगतसिंह
→ जीत

→ यह अंग्रेजी (EIC) से सर्वप्रथम संधि की थी। (1818)

स्वरूपसिंह (1842-61)

→ 1851 की क्रांति के समय यह मैवाड़ का राजा था।

→ पासवान/हामी = हेजाबाई यह स्वरूपसिंह की मृत्यु पर अंगी दुई थी

सज्जनसिंह (1842-84)

→ निर्माण करवाया = सज्जनगढ़ दुर्ग (उदयपुर) = उपनाम = मैवाड़ अ मुकुटमणि
मानधून पैस
वाणी विलास
महल

→ इसने स्थापना की = महेन्द्रराज सभा 1880

→ कपाथी = न्यायिक सस्था थी।